29 / 05 / 77 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

पुरुषार्थ की रफ्तार में तीव्रता का अनुभव

➢➢ तीव्र पुरुषार्थी का अनुभव

➳ _ ➳ परमात्म आज्ञा का पालन करने वाली आज्ञाकारी आत्मा हूं

→ मस्तक में चमकता एक दिव्य सितारा हूं

→ मुझ आत्मा सितारे की चमक अंधकार मे चमकते हुए दीये के समान फैल रही है

→ बाबा के फरमान अनुसार मैं आत्मा उस महाज्योति को याद कर रही हूं

→ बाबा से बुद्धि का कनेक्शन जोड़ मैं आत्मा मूल वतन वासी होने का अनुभव कर रही हूं

- ये मेरा निज धाम है
- अपने घर पहुंचकर अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कर रही हूं

→ बाबा मुझ पर सर्व शक्तियों रुपी रंग बिरंगी किरणों की वर्षा कर रहे है

→ ज्ञान गुण शक्तियों से भरपूर कर रहे है

→ ज्ञान रुपी घृत से मुझ आत्मा की चमक बढती जा रही है

→ मैं आत्मा समय के महत्व को जान अनमोल बेशुमार कीमती खजानों को जमा करती जा रही

- ज्ञान रत्नों का खजाना
- समय का खजाना
- शुद्ध संकल्पों का खजाना

→ मैं कौन मेरा कौन व कौन मेरा साथ निभा रहा है इसको यथार्थ रीति जान गयी हूं

→ परमात्म ज्ञान की राह पर चलते मैं और मेरापन से मुक्त हो रही हूं

→ हद के आकर्षण व सोने की जंजीरें मुझ आत्मा को नही बांध सकती

→ मुझ आत्मा के सर्व सम्बंध बस एक बाबा के साथ

- मैं आत्मा सम्पूर्ण रुप से सरेंडर हूं
- तन मन धन से समर्पण हूं
- जो भी है बस बाबा की ही देन है

➳ _ ➳ मैं आत्मा अपनी चेकिंग करती हूं कि कोई सूक्ष्म मे भी लगाव तो नही है

→ इस देह व देह के सम्बंधों से पुरानी दुनिया से मुझ आत्मा का कोई लगाव झुकाव नही है

- वही लगाव हमें खींचते है
- उडती कला से गिरती कला मे ले आते है

→ सब के प्रति आत्मिक भाव है

→ सब मेरे आत्मा भाई है

→ आत्मिक वायब्रेशनस फैला रही हूं

→ किसी को भी मेरा कहना पाप है

- पाप कर्म होने से बुद्धि ऊंची स्टेज पर नही टिक सकती

➳ _ ➳ चेकिंग करती हूं मैं आत्मा ऊंची स्टेज पर टिकती हूं

→ मैं आत्मा ऊंची स्टेज पर न टिकने का कारण जानती हूं

- उसका कारण है - व्यर्थ संकल्प
- श्रीमत का किसी न किसी रुप से उल्लंघन

→ मैं आत्मा अपनी चेकिंग कर अपने हर संकल्प हर कर्म पर अटेंशन रखती हूं

→ बापदादा से मिली दिव्य बुद्धि से शुद्ध संकल्प करती हूं

→ बापदादा के साथ कम्बाइंड रह कर्मयोगी बन हर कर्म करती हूं

→ सम्बंध सम्पर्क मे रहते स्वयं को निमित समझ जिम्मेवारी निभा रही हूं

→ एक बाबा की याद मे रह पवित्र प्रवृति मे बिजी रह व्यर्थ संकल्पों से निवृत होती जा रही हूं

→ कमल समान न्यारा और प्यारा रह हर कर्म करते बाप को प्रयत्क्ष करने का पुरुषार्थ कर रही हूं

→ मनसा वाचा कर्मणा और संकल्पों मे पवित्र रहते पुरुषार्थ की रफ्तार मे तीव्रता अनुभव कर रही हूं

- जैसे बापदादा अपनी गोद में बिठा उडाकर अपने साथ ले जा रहे है

→ कराने वाला करा रहा है करनहार हम किए जा रहे...

→ फलक तुम्हारी ओ प्यारे भगवन...